Vol 2 Issue 7 Jan 2013 ISSN No :2231-5063

International Multidisciplinary Research Journal

Golden Research Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

Welcome to GRT

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2231-5063**

Golden Research Thoughts Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

......More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.aygrt.isrj.org

Golden Research Thoughts
Volume 2, Issue. 7, Jan. 2013
ISSN:-2231-5063
Available online at www.aygrt.net

ORIGINAL ARTICLE

डॉ. रांगेय राघव की कहानियों में विभिन्न शैलियों का प्रयोग

दिलीप कोंडीबा कसबे

हिंदी विभाग , विज्ञान महाविद्यालय, सांगोला ,ता. सांगोला जि.सोलापुर .

सारांश

विभिन्न शैलियों के प्रयोग में रचनात्मक कौशल याने शैली है। किसी लेखक ने अपनी मस्तिष्क की ईमानदारी से अनुभूतिपुर्ण लिखी हुई प्रतिलिपि या उसके स्वभावांकन का एक अंग याने मिश्रित या अन्य विभिन्न शैलियाँ है। जैसे - नाटय शैली, आत्मकथात्मक शैली, वर्णनात्मक शैली या विश्लेषणात्मक शैली, व्यंग्यात्मक शैली, पत्रात्मक शैली, मनोविश्लेषणात्मक शैली, काव्यात्मक या भावात्मक शैली, मिश्रित शैली आदि का प्रभावात्मकता से समावेश है, यहाँ डॉ. रांगेय राघव का कहानी साहित्य विभिन्न शैलियों का ओतप्रोत से यथार्थांकन है, इसमें गैर नहीं है।

प्रस्तावना :—

*** शैली किसे कहते है ?**

रचनात्मक कौशल अर्थात शैली है। शैली अंग्रेजी 'स्टाईल' का अनुवाद है। अंग्रेजी साहित्य के प्रभाव से वह हिंदी में आया है। प्राचीन साहित्य शास्त्र में शैली से मिलते-जुलते अर्थ को देनेवाला एक शब्द प्रयुक्त हुआ है - रीति। रीति को विशिष्ट पदरचना कहकर परिभाषित किया है। ठीक ही इसी तरह की ध्वनी युनानी विचारक प्लेटो की व्याख्या से मिलती है। प्लेटो कहता है - '' जब विचार को तात्विक रुपाकार दे दिया जाता है, तो शैली का उदय होता है। '' इसी धारणा की पुष्टि फ्रांन्सिसी उपन्यासकार स्तान्धाल करता है। स्तान्धाल के शब्दों में - ''शैली का अस्तित्व इसमें निहित है कि दिये हुए विचारों के साथ उन सब परिस्थितियों को जोड दिया जाय, जो कि उस विचार के अभिमत प्रभाव को संपूर्णता में उत्पन्न करनेवाली है। '' इससे मिलता-जुलता ही विचार प्रसिध्द नाटककार बर्नार्डशा का है - ''प्रभावपूर्ण अभिव्यक्ति शैली का अर्थ और इति है। '' अतः शैली परिभाषायें अनेक है। किसी ने शैली को 'उचित शब्दों का उचित थामनेवाला चौखटा।' किसीने 'लेखक के मस्तिष्क की ईमानदारी से की हुई प्रतिलिपी' या उसके 'स्वभाव का एक अंग माना है। ' विभिन्न विद्वानों के विचारों का समन्वय करते हुए तथा कृति को ध्यान में रखकर 'हिंदी साहित्य कोष - भाग - १' में शैली की व्याख्या इस प्रकार दी है - ''शैली अनुभूत विषय वस्तु को सजाने के उन तरीकों का नाम है, जो उस विषय वस्तु की अभिव्यक्ति को सुंदर एवं प्रभावपूर्ण बनाते है। ''[१] यहाँ सारांशतः शैली ही वह तत्व है जिस पर कहानी की सफलता निर्भर है।

डॉ. रांगेय राघव ने अपनी कहानियों में विभिन्न शैलियों का प्रयोग किया है, जो निम्न प्रकार है

Title : डॉ. रांगेय राघव की कहानियों में विभिन्न शैलियों का प्रयोग Source:Golden Research Thoughts [2231-5063]दिलीप कोंडीबा कसबे yr:2013 vol:2 iss:7.

१) नाटय शैली –

कहानी में संवाद एक महत्वपूर्ण तत्व है। संवाद घटना क्रम को आगे ले चलने का प्रमुख साधन है। संवादों के माध्यम से पात्रों के चरित्र को व्यक्त किया जाता है। संवाद पात्रों को गति देते है। संवाद में नाटकीयता एक प्रमुख तत्व है। उससे कौतुहल निर्माण होता है, जिससे पाठक कथावस्तु से बंधा रहता है। कहानी में कथा वस्तु को प्रवाही रखने तथा जीवंतता लाने के लिए संवादों से सहायता ली जाती है। कथाकार जब कथा के वर्णन में चत्मकार एवं कलात्मकता लाना चाहता है तो संवाद का ही सहारा लेता है। नाटकीयता उत्पन्न करने के लिए कहानी में संवाद की ही सर्वाधिक उपयोगिता होती है। संवादों में जितनी सांकेतिकता होती है, कहानी में उतनी ही अधिक प्रभावान्विति आती है।

डॉ. रांगेय राघव में 'ममता की मजबूरी' कहानी में नाटय-शैली प्रयुक्त की है।

'' क्या हुआ? '' डॉक्टरने पूछा ।
'' गजब हो गया, डॉक्टर ! '' नर्सने घबराये - से स्वर में कहा । डॉक्टर चिहुंककर खडी हो गई । पूछा '' जल्दी बताओ क्या बात है? ----
'' जी---जी---- उसने अपने बच्चे का गला घोंटकर मार डाला ----''
''नॉनसैन्स! '' डॉक्टर चिल्लाई, ''ऐसा कैसे हो सकता है? वह उसी का तो बच्चा था।''२ इस प्रकार स्पष्ट है, कहानी साहित्य में भी नाटयशैली प्रभावपूर्ण होती है।

२) आत्मकथात्मक शैली –

उत्तम पुरुष का प्रथम पुरुष की ओर से जो कथा प्रस्तुत की जाती है उसे आत्मकथात्मक शैली के अंतर्गत समाविष्ट करते है। स्थूल रूप से इस शैली के अंतर्गत प्रायः वह सब कथायें आ जाती है, जिनमें प्रथम पुरुष की ओर से किसी कथा का वर्णन हो । इस शैली की सबसे बडी विशेषता यह है कि इसमें लेखक और पाठक में पर्याप्त निकटता रहती है इसीलिए इसमें प्रभावात्मकता आती है।

डॉ. रांगेय राघव ने 'तबेले का धुंधलका', 'नयी जिंदगी के लिए', 'दया के ठिकाने', 'चौथा तरीका', 'नर्स', 'बाप का दोस्त', 'फीकी चाय', 'मैं ज्ञान के आखर, विज्ञान के बोल' आदि कहानियाँ आत्मकथात्मक शैली में लिखी है। 'बाप का दोस्त' कहानी आत्मकथात्मक शैली में रचित है परंतु उसमें कथानिवेदक 'मैं' कही नही आता, उसके परिवार की काहनी में ही तत्कालीन यथार्थ उभरकर आया है। इस आत्मकथात्मक शैली का उदाहरण इस प्रकार है- ''हम नौ लडकियाँ थी।-- माँ के एक और प्रसव होनेवाला था। उनके नौ बार लडकियाँ हो चुकी थी। और एक - दूसरी बहिन में समय का इतना कम अंतर होता था कि उन्हें सँभलना काफी कठिन हो गया था।''३ इससे स्पष्ट है कि लेखक ने हम पर आत्मकथात्मक शैली का यथायोग्य प्रभाव डाला है।

३) वर्णनात्मक शैली –

वर्णनात्मक शैली के द्वारा लेखक अपेक्षाकृत विषय-विस्तार करता है। इस शैली में कथाकार को इतिहास की भाँति कहानी के चरित्रों तथा उससे संबंधित घटनाओं का इतिवृत्तात्मक वर्णन अपनी कल्पना, अनुभूति एवं जानकारी के आधार पर लिखना पडता है। कहानी में वर्णनात्मक शैली ही सर्वाधिक प्रचलित है। अतः इस शैली का क्षेत्र बडा व्यापक है।

तृतीय पुरुष के रुप में वर्णनात्मक शैली ही प्रायः कहानियों के क्षेत्र में सर्वाधिक प्रचलित है। इस शैली में वर्णन उस रंगमंच की तरह है, जिसके भीतर सारा नाटक घटित होता है। इसके आलावा चरित्रों को लेकर वर्णन का महत्वपूर्ण योग रहता है। वर्णन सीधा भी हो सकता है और सांकेतिक भी । इस शैली में प्राकृतिक दृश्य तथा शारीरिक विकृति या व्यवहार का वर्णन किया जाता है।

डॉ. रांगेय राघव ने 'पंचपरमेश्वर', 'समुद्र के फेन', 'गूंगे', 'अभिमान', 'धर्म संकट', 'ऊँट की करवट' आदि कहानियों में वर्णनात्मक शैली का प्रयोग किया है। जैसे - 'गूंगे' कहानी में शारीरिक विकृति का वर्णन है - ''वह ऐसे बोलता है जैसे घायल पशु कराह उठता है, शिकायत करता है जैसे कुत्ता चिल्ला रहा हो और कभी-कभी उसके स्वर में ज्वालामुखी

के विस्फोट की-सी भयानकता का थपडे मार उठती है। वह जानता है कि वह सुन नहीं सकता और बताकर मुस्कुरात है। वह जानता है कि उसकी बोली को कोई नहीं समझता फिर भी बोलता है। ''[४]

४) विश्लेषणात्मक शैली –

विश्लेषणात्मकता का भावार्थ विश्लेषण करना, स्पष्टीकरण देना, विवेचन करना है। विश्लेषणात्मक शैली में विश्लेषण का अर्थ किसी कृति के विभिन्न अवयवों का अलग-अलग तथा उनके पारस्परिक संबंधों का विवेचन करना ही न लेकर किंचित विशिष्ट अर्थ में अर्थात विवेचनात्मक या तर्कप्रधान शैली में लिखे गये कहानी की विशिष्टता को स्पष्ट करने के लिए किया जाता है। इस शैली के अंतर्गत कहीं चिंतन प्रधान शैली, कहीं आलोचनात्मक शैली, कहीं तर्क-वितर्क शैली, कहीं भाषण एवं व्यंगात्मक शैली का भी प्रयोग किया जाता है।

कभी-कभी विचारों का खोखलापन दिखाने के लिए भी लेखक ऐसी शैली का प्रयोग करता है। इस शैली में मनोवैज्ञानिकता, बौध्दिकता या आदर्श से आग्रहित विश्लेषण पध्दुति का प्रयोग किया जाता है। रांगेय राघव की कहानियों में इस शैली का प्रयोग किस तरह हुआ है, ऊसपर विचार करेंगे।'पंच परमेश्वर', 'देवदासी' जैसी कहानियों में विश्लेषणात्मक शैली का प्रयोग किया गया है। 'पंचपरमेश्वर' कहानी में मार्क्सवादी विचारधारा का प्रभाव रहा है।

'देवदासी' कहानी में विश्लेषणात्मक शैली प्रभावपूर्ण प्रयुक्त है। 'पाप' संकल्पना का विवेचन करते हुए रंगभद्र इस शैली को अपनाते है। देखिए - ''पाप? ''रंगभद्रा ने हँसकर कहा - ''पाप यह नहीं है कि जीते-जागते मनुष्य को एक कठपुतली बना दिया है? उससे उसकी दृष्टि छीनकर दूसरों को लूटने के लिए उसे नयन दे दिये है, उससे उसके हृदय का अपहरण करके उसे दूसरों के हृदयोंपर दस्युवृत्ति करने के लिए छोड दिया है? यदि मनुष्य को झूठे प्रलोभन देकर उसे मनुष्य नहीं रहने दिया तो इससे बढकर और कौन-सा पुण्य-होगा?''[५]

५) व्यंग्यात्मक शैली –

साहित्य की व्यंगात्मक शैली महत्वपूर्ण है। साहित्यकार अपनी बातें व्यंग्य की सहायता से स्पष्ट करता है। उसे जो कहना है वह उपरोधात्मकता से कहता है। नालंदा 'विशाल शब्द सागर' में व्यंग्य की उत्पत्ति इस प्रकार दी है - ''शब्द की व्यंजना कृति से प्रकट होनेवाला अर्थ व्यंग्य की व्युत्पत्ति का उत्स है। ''६ यहाँ स्पष्ट है, परंपरागत प्रचलित अर्थ के साथ व्यंग्य का अर्थ 'ताना' और 'चुटकी' है। वर्तमान हिंदी में परंपरागत अर्थों की अपेक्षा उसके व्यापक रुप को स्वीकृत किया गया है। व्यंग्य अंग्रेजी के 'सटायर' का पर्याय माना गया है। व्यंग्य युगीन विसंगतियों को वैदग्धपूर्ण शैली के जीवन का तीखा प्रहारात्मक स्वर है। दूसरें शब्दों में व्यंग्य ऐसी साहित्यिक अभिव्यक्ति है, जिसके द्वारा मानव तथा समाज की विसंगतियों, विकृतियों, दुर्बलताओं और कमजोरियों पर प्रकाश डाला जाता है।

डॉ. रांगेय राघव में व्यंग्य करने का मद्दा प्रमुख है। उन्होंने अपनी 'सारनाथ के खंडहरों में,'कठपुतले', तिरिया', 'दरवाजा' आदि कहानियों में व्यंग्यात्मक शैली का प्रयोग किया है।

'सारनाथ के खंडहरों में' कहानी में चुटीला व्यंग्य है - ''सारे भारतीय वीरों के मूंछे है, बस राम और कृष्ण के चित्रों में मिलती।''[७] स्पष्ट है, बिना मुह के राम और कृष्ण को योध्दा कैसे मान लिया जाय? मूंछे और वीर पुरुष का संबंध व्यंग्यात्मकता से बताया है।

६) पत्रात्मक शैली –

अपनी बाते लिखित रुप में दूसरों तक पहुँचाने की मानव की सहज प्रवृत्ति है। संदेश देना, बाते बताना, सुचित करना आदि के प्राचीन काल से मानव संकेतात्मक चित्रों को अपनाता रहा है। धीरे-धीरे पत्र का प्रयोग होने लगा। पत्रात्मक शब्द - पत्र + आत्मा से बना है। पत्र का प्रयोग करके अपनी विचारधारा साहित्यकार स्पष्ट करता है, तब पत्रात्मक शैली बनती है।

पत्रात्मक शैली के रुप में लिखी गई कहानियों का आधार पत्रोंद्वारा लिखे गये पत्र होते है। पत्रात्मक शैली आत्मकथात्मक शैली का ही एक रुप है। डॉ. रांगेय राघव ने 'कुछ नहीं' जैसी कहानी में पत्रात्मक शैली का प्रयोग किया है।

प्रस्तुत कहानी लंबा पत्र है, जो सोमनाथ ने मौनी गली, कूचा लाल से प्रकाश को लिखा है -

'' प्रिय प्रकाश,

तुम्हारा पत्र आया । और यह भी समझ लिया कि भामी से तुम्हारी बिल्कुल नहीं पटती। लेकिन यह भी समझ में नहीं आता कि विवाह का आखिर मतलब क्या है? --- कुंवारी लडकियों का लडको से प्रेम, प्रेम को ही सबकुछ समझ ने का पागलपन या पति-पत्नी का संबंध, न जाने कितनी उल्टी-सीधी बाते है, और जो कहीं छिपा - चोरी किसी की पत्नी या किसी के पति का संबंध हो तो भला क्या कहने ? ''[८] प्रस्तुत पत्र में लेखक ने भारतीय दांपत्य जीवन, पति-पत्नी संबंध तथा दो दंपत्तियों के आपसी संबंधों का चित्रण किया है। संक्षिप्त में 'पत्र' विचारात्मक संदेश देनेवाली विधा है, साहित्य में यत्र-तत्र इसका प्रयोग किया जाता है। रांगेय राघव जी ने भी इस शैली को अपना कर अपनी कृति को बहुआयामी बनाया है।

७) मनोविश्लेषणात्मक शैली –

मनोविश्लेषणात्मक शैली द्वारा लेखक दूसरों के मनोजगत का सुक्ष्मातिसुक्ष्म विश्लेषण प्रस्तुत करता है। जिस प्रकार विवरणात्मक शैली बाहय वस्तुओं का सुक्ष्म चित्रणमयी चित्र उपस्थित करती है, उसी प्रकार मनोविश्लेषणात्मक शैली मन के भावों, तरंगो आदि का चित्रण करके मन के परतों को उभारती है।

मनोविश्लेषणात्मक शैली पर फ्रायड के सिध्दांतो का विशेष रुप से प्रभाव है। उसके शिष्य एडलर और युंग ने भी इस क्षेत्र में अपना योगदान दिया है। पात्रों की मनःस्थिति, मान्यताएँ, विचार धाराओं का प्रभावी चित्रण किया है। इस शैली द्वारा मनःस्थिति स्पष्ट की जाती है।

डॉ. रांगेय राघव ने 'आवारा'तथा 'जीवन की तृष्णा' आदि कहानियों में इस शैली का प्रयोग किया जाता है। लेखक 'आवारा' में पात्रों की मनःस्थिति का ऊहापोह करवाते है कि - ''यारों जिंदगी जीने का मजा है। क्या मिलेगा बीवी-बच्चों को ? ---- तुम सब गुलाम, हम आजाद है। --- कसम से कहो जवानी तो हरजाई, हम तो हमेशा जवान है।''[९]

८) काव्यात्मक या भावात्मक शैली –

काव्यात्मक या भावात्मक शैलीद्वारा कहानी में भावों का प्रस्फुटण होता है। संक्षेप में मनपटल पर अमिट छाप छोडनेवाली विधा काव्य है। कहानीकारों ने काव्यात्मक शैली को अपना कर पात्रों की स्थिति, नारी की दशा को काव्य के सहारे चित्रित किया है।

डॉ. रांगेय राघव के 'गाजी', 'देवदासी', 'लहू और लोहा', तिरिया आदि कहानियों में काव्यात्मकता या भावात्मकता का शैली का प्रयोग हुआ है। जैसे 'गाजी' में कहा है - ''सांझ की धूप मस्जिद के ऊँचे गुम्बद पर थंडी होकर लेटी-लेटी सरकने लगी थी।''[१०] स्पष्ट है इसमें काव्यात्मक या भावात्मक शैली है। 'देवदासी' कहानी में काव्य का आधार लेकर वर्णन किया है - ''अकेला पोत सागर की ओर बह चला। निराधार, अनंत जलाराशी पर डगमगाता, काँपता, भयभीत होता। उज्वल प्रकाश लहरों पर भागने लगा। ''[११]

९) मिश्रित शैली –

मिश्रित शैली का तात्पर्य है एक ही रचना में कई शैलियों का प्रयुक्त होना। डॉ. रांगेय राघव ने अपनी कहानियों में वर्णनात्मक और नाटकिय शैली का मिश्रित प्रयोग किया है। उनकी मिश्रित शैली 'आवारा', 'सारनाथ के खंड हरों में', 'चकाबू का किला', 'इन्सान' तथा 'नरक' आदि कहानियों में दृष्टव्य है।

संदर्भ सूची –

१) डॉ. धीरेंद्र वर्मा - हिंदी साहित्य कोष, भाग - १, पृ. ६८०-८१
२) डॉ. रांगेय राघव - ममता की मजबूरी, पृ. ३६९
३) डॉ. रांगेय राघव - नई जिंदगी के लिए, पृ. ११६
४) डॉ. रांगेय राघव - गूंगे, पृ. ४७
५) डॉ. रांगेय राघव - देवदासी, पृ. १८५
६) नवलजी - नालंदा विशाल शब्द सागर, पृ. १३०८
७) डॉ. रांगेय राघव - सारनाथ के खंडहरो में, पृ. ३१७
८) डॉ. रांगेय राघव - कुछ नहीं, पृ. २५६
९) डॉ. रांगेय राघव - आवारा, पृ. १३७
१०) डॉ. रांगेय राघव - गाजी, पृ. ६७
११) डॉ. रांगेय राघव - देवदासी, पृ. १९८

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.aygrt.isrj.org